ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in August 2025

स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवाद संबंधी विचार

शिफा तबस्सूम, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

भारतीय संस्कृति के प्रमुख घटक और मानववाद एवं सार्वभौमिकता विवेकानन्द के राष्ट्रवाद की आधारशिला मानी जाती है। पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत विवेकानन्द का राष्ट्रवाद भारतीय धर्म पर आधारित है। जो भारतीय लोगो का जीवन रस है। विवेकानन्द ने आंतरिक शुद्धतः एवं आत्मा की एकता के सिद्धान्त पर आधारित नैतिकता की नवीन अवधारणा प्रस्तुत की है। विवेकानन्द के अनुसार, नैतिकता कुछ नही बल्कि व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाने की और सहायता करता है। विवेकानन्द का मानना है कि किसी भी राष्ट्र का युवा जागरुक और अपने उद्देश्यों के प्रति राष्ट्र समर्पित हो, वह देश के किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह एक मानवतावादी चिंतक थे, उनके अनुसार मनुष्य का जीवन ही एक धर्म है, धर्म न तो पुस्तकों में न ही धार्मिक सिद्धान्तों में, प्रत्येक व्यक्ति अपने ईश्वर का अनुभव स्वयं करता है।

मूल्य शब्द – धार्मिक एव अध्यात्मिक, राष्ट्र, राष्ट्रप्रेमी, समाज आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, ईश्वरीय, दलित शोषित, संस्कृतियाँ आदि।

प्रस्तावना

स्वामी विवेका की प्रसिद्धि राष्ट्रप्रेमी के रूप में हुई। स्वामी विवेकानन्द एक धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेता और दार्शनिक थे उन्होने पश्चिमी दुनिया में वेदान्त और योग्य की शुरुआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई विवेकानन्द भारत के उन महान धर्मगुरूओं में से थे जिन्हाने राष्ट्र एवं धर्म का प्रबल रूप से प्रचार प्रसार किया। जिनके प्रति वर्तमान पीढ़ी ऋणी है और भावी पीढ़ी सदैव ऋणी रहेगी। उन्होंने पूर्व एवं पश्चिमी की संस्कृतियो श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय करने का प्रयास किया। विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता को धर्म के सार्वदेशिक स्वरूप को उन्होंने स्पष्ट और तार्किक रूप में रखा। राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने स्वीकार किया कि जो कुछ भी मैं हुँ जो कुछ सारी दुनियां में एक दिन बनेगी वह मेरे गुरू श्री रामकृष्ण के कारण बनेगी।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की भूमि में बहुत से अग्निगर्भ तेजस्वी महापुरूषों जन्म लिया है। अजस्र मनावता व विचारों की जीवधारी का अभ्युदय हुआ है इन्ही महापुरुषों से धर्म से प्रेम, राष्ट्र की प्रति अपनी लगाव को लेकर जन्म लिया। स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिक दिग्गज गुरु थे। स्वामी जी ने अपने अल्पकाल जीवन में ही धर्म निरपेक्ष राष्ट्र और प्रगतिशील समाज की परिकल्पना की थी। विवेकानन्द के जीवन को डेढ सदी बीत चूकि है। तथापि आज भी उनके संदेश प्रेरणा के स्त्रोत है। सम्पूर्ण राष्ट्र के भविष्य की दिशा तय करने में उनके निर्णायक भूमिका का निर्वहन करने की क्षमता रखते है। राष्ट्रीय एकता के बारे में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि :– **भाषायी ऐतिहासिक एवं क्षेत्रिय विविधताएँ है लेकिन इन विविधताओं का भारत की संस्कृति को एकता के सूत्र में पिरोये हुये है।**

स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवाद संबंधी विचारः– युवा वर्ग को लेकर विवेकानन्द ने अपने बहुत ही गहन उपदेशों का विशेष योगदान दिया है। विवेकानन्द का युवाओं को संदेश दिया है कि जागृत हो, अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहे और तब तक प्रयास करते रहे जब तक वे प्राप्त न हो जाएं। उन्होंने युवाओं में कड़ी मेहनत करने, स्वयं पर विश्वास रखने और दुसरों की सेवा करने का आहवान किया। उनका मानना था कि युवाओं में आपार शक्ति और क्षमता होती है, और वे ही राष्ट्र और समाज में परिवर्तन ला सकते है। राष्ट्र के प्रति युवाओं के कर्तव्यों का उन्होंने गहन विचार प्रस्तुत की। स्वामी जी का दृढ का मत था कि सभी मार्ग एक सच्चे ईश्वर की ओर ले जाते है, जैसा की ऋग्वेद में कहा गया है कि ''एक मत सत विप्र बहुदा वदन्ति'' अर्थात् सत्य एक है, दार्शनिक इसे विभिन्न नामों से पुकारते है।

स्वामी विवेकानन्द की दिव्यता, नैतिकता पूर्व–पश्चिम का जुड़ाव एवं एकता की भावना विश्व के लिए वास्तविक संपत्ति है। उन्होंने हमारे देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को परिभाषित किया। उनके बारे में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा है, ''स्वामी जी इसलिए महान है कि उन्होंने पूर्व और पश्चिमी, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया है, देशवासियों में उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म – विश्वास आत्मसात किया है।'' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए. एल. बाशम ने कहा था – स्वामी विवेकानन्द जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में याद किया जाएगा''।

स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं के लिए कहा था ''उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।'' वे युवाओं में आशा और उम्मीद देखते थे। उनके लिए युवा पीढी परिवर्तन को अग्रदूत है। उन्होंने कहा था– युवाओ में लोहे जैसी मांसपेशियां और फौलादी नसे है, जिनका ह्रदय वज्र तुल्य संकल्पित है।'' वह चाहते थे कि युवाओं में विशाल ह्रदय के साथ मातृ–भूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। उन्होंने युवाओं के लिए कहा था '' जहाँ भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहाँ भी लोग संकट में है, आप वहाँ जाए और उनके दुखो को दूर करें'' आप पर देश की भविष्य की उम्मीदे टिकी है। वे भारतीय संस्कृति व पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के दोनों सर्वोत्तम पहलुओं को सामने लाना चाहते थे।

स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्त्रोत है। वे महान विचारक, ओजस्वी वक्ता, दुरदर्शी, कवि और युवा संरक्षक थे। स्वामी विवेकानंद के दिखाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्वास्थ भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। अमृत काल में एक महान् दार्शनिक, विचारक और युवाओं के प्रेरणा पुंज स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं, राष्ट्रीयता की भावना, देशभक्ति, विविधता में एकता और समावेशिता को आत्मसात करने का संकल्प ले।

राष्ट्रवाद एक ऐसी विचारधारा है जो प्रत्येक व्यक्ति की पहचान, संस्कृति और स्वतंत्रता को जोड़ती है। राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक भावना, सांस्कृतिक, सामाजिक विश्लेषणात्मक से जुड़ा हुआ है। विवेकानन्द ने राष्ट्र को लेकर अपने तमाम विचारों का उल्लेख किया है। उन्होंने राष्ट्र के प्रति गहन लगाव से लोगों को जाग्रत किया है। अनेक विचारो में विवेकानन्द ने युवाओं को प्रेरणा दी कि राष्ट्र के युवा ही राष्ट्र के स्तम्भ है जो राष्ट्र की उन्नति में सहायक भूमिका निभाते है। प्राचीन काल से ही लोगों की मानसिक स्थिति में राष्ट्र एक धर्म से जुड़ा कार्य था। विवेकानन्द ने लोगो को धर्म देश को जुड़ा राज्य ही नहीं बल्कि देश को उच्च सीमा तक पहुंचाना चाहते थे। राष्ट्र में निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की उन्नति में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले होने वाली तमाम गतिविधियों में भाग ले जिससे राष्ट्र पूर्ण से विकासित हो सके।

राष्ट्रवाद लोगों का आध्यात्मिक एकीकरण तथा उनकी आत्मा की आध्यात्मिक जाग्रात है। धर्म उनके चिंतन का मुख्य आधार थे तथा भारतीय राष्ट्र की मुख्य शक्ति और राष्ट्र के रूप में उसकी पहचान का मुख्य तत्व भी उन्होंने धर्म को बतलाया है। तथा धर्म के आधार पर उन्होंने राष्ट्र को जाग्रत किया। करूणा सेवा एवं त्याग का राष्ट्रीय आदर्शों के रूप में मान्यता प्रदान की, इसलिए विवेकानन्द का राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता एवं मानवता पर आधारित है। स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धान्त की नीव रखने के लिए कार्य किया।

उपयुक्त पाँच सुरा से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व को पुनः निर्माण कर सकता है। यहाँ पुर्ननिर्माण से व्याक्ति देश, समाज को जाग्रत कर सकता है।

विवेकानन्द ने कहा है– ''जीवन में एक ही लक्ष्य को साधो और दिन–रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और उस लक्ष्य की प्राप्ति के पूरी तन्मयता के साथ जुट जाओ।'' हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि उठो जागो लक्ष्य की प्राप्ति तक चलते रहो। स्वामी जी का कहना था कि जबतक सदियों से चली आ रही शोषण, मानसिकता का लोगो के अन्दर गम्भीर छाप छोड़ चूकी है। सदियों के शोषण हाथ के कारण लोग मानव होने का एहसास खो चुका है। अर्थात लोग जन्म से ही जमींदारो, साहुकारों एवं पूजीपतियों का गुलाम मानते चले आ रहे है। यही कारण है स्वामी जी ने राष्ट्र के प्रति लोगो को जाग्रत करने की अपनी प्रबल शाक्त लगा दी। विवेकानन्द का मानना था कि जो व्याक्त निर्बल एवं कमजोर होता है। वह स्वयं को शारिरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर मानता है और इसके विपरीत जो व्यक्ति स्वयं को प्रबल एवं सशक्त समझता है। तो वह पूरे ब्राह्मण्ड के लिए अज्ञेय होता है विवेकानन्द का राष्ट्र प्रेम ही विश्व प्रेम समाहित है। वे संकीर्ण राष्ट्रभक्ति एवं संर्कीण आध्यामिकता के सतत विरोधी थे। राष्ट्र भावना से प्रेरित स्वामी विवेकानन्द युवाओं में राष्ट्र के प्रति अपने लगावों का प्रतिरूप दिया है।

स्वामी की राष्ट्रवादी के पक्षवादी थे इसलिए वे सांस्कृति एवं धार्मिक सृष्टि से वासुदेव कुटुम्बकम की संस्कृ ति और सार्वभौग धर्म का पूरे जोर से सर्मथन करते थे। उनका मानना है कि राष्ट्र के रूप जो हम अपना व्यक्तित्व विस्तृत कर बैठे है और यही इस देश में सब दुष्कर्मों की जड़ है। प्रत्येक देश में जो बुराईयाँ देखने को मिलती है वह उस देश की बुराई नही है। बल्कि वह देश में रहने वाले लोगों एवं धर्म द्रोह का

कारण है। इस लिए दोष धर्म का नही मनुष्य का है। जो राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन नही करते है। स्वामी जी का मानना था कि भारत में राष्ट्रवाद तब तक उन्नति नही सकता जब तक लोक अध्यात्मक तथा कल्याणकारी भावनाओं नहीं जुड़ते है। राष्ट्रवाद का मूल स्वर है सामाजिक जग्राति । विवेकानन्द का कहना है कि मानव और राष्ट्र का आन्तारिक सम्बन्ध है। और साम्पूर्ण विश्व मानव समाज एकत्व में निहित है। राष्ट्र तभी प्रगति पर होगा जब मानव क्रेन्दित एवं मानव कल्याणकारी बनेगा। राष्ट्र ही हमारा जाग्रत देवता है। राष्ट्र के प्रेम की भावनापूर्ण से भरे विवेकानन्द राष्ट्रवाद धार्मिक सहिष्णुता, धर्म निरपेक्ष अन्तर्राष्ट्रीयता, मैत्री और सच्चे मातृत्व के समर्थक है। विवेकानन्द की राष्ट्रप्रेम की भावना हमेशा स ही लोगों को उत्थान एवं जनकल्याण के लिए प्रेरित करती रही है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम कह सकते है कि स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र के प्रति उनका गहरा लगाव जो राष्ट्र में निवास करने वाले व्यक्ति, समाज, धर्म आदि का पूर्ण से समाहित करके विवेकानन्द का सम्पूर्ण शब्द बनता है। जिनमें वह राष्ट्र, के प्रति युवाओं का कर्तव्य एवं धर्म को अत्यधिक महत्व दिये है। स्वामी विवेकानन्द के बहुआयामी विराट व्यक्तित्व तथा कृति में राष्ट्रवादी विचार समाहित है। निश्चित रूप से इस समाजिक, राजनीति एवं धार्मिक युग में स्वामी जी के विचार संजीवनी का कार्य करेंगे। विवेकानन्द ने अपने विचारो का उल्लेख अलग–अलग जगह पर किया है, धर्म, समाज एवं राष्ट्र कल्याण के लिए लोगों को किसी सीमा में नहीं बाँधा बल्कि संसार के हित मे राष्ट्रहित की बात कही है। ऐसा ही सोच एवं दृष्ट्रिकोण राष्ट्रवाद की सोच को बदलता है। विवेकानन्द ने जिस देश कि कल्पना की थी अर्थात जैसा बनाना चाहते थे– जिसमें जाति, धर्म, ऊँच–नीच आदि न हो। उनका कहना है कि – हम लोग सब धर्मो के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नही करते है वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी पर समस्त देशों, धर्मों के उत्पीड़ितो एवं शरणार्थियों को आश्रय दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि० प्रेस यूनिट, टी० पी. नगर मेरठ, 2009।
2. स्वामी विवेकानन्द का शिकागो में धर्म सम्मेलन भाषण 11 सितंबर 1893।
3. शर्मा डा० योगेंद्र, भारतीय राजनीतिक चिंतक, डॉ. सी. एलं बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005।
4. पाण्डेय, प्रो. रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
5. संह, डॉ. कर्ण, विकासोन्मुख भारतीय समाज मे शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर खीरी 2011–12।
6. सिंघ डा. ओपी. शिवा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2012।
7. शेखर हिमांशु ''स्वामी विवेकानन्द के सपनों का भारत'' डायमन्ड पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, संस्करण – 2014।
8. शर्मा भरत 'भरत' तमसाछन्न संसार को जागृत ! स्मारिका अक्टूबर 2012।
9. विवेकानन्द स्वामी 'हे भारत! उठो जागो ! रामकृष्ण मठ नागपुर, दशम संस्करण, 2013।
10. मिशीकख डॉ. स्वर्णलता, 'युगनायक विवेकानंद केंन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, जोधपुर, प्रथम संस्करण, जुलाई 2013।
11. विवेकानन्द स्वामी 'शिक्षा' रामकृष्ण मठ, नागपुर, एकादश संस्करण, 1979।
12. बहुगुणा उमा एवं शिवानी ''युवा पीढी और मादक द्रव्य व्यसन'' श्रृंखला ।